हिमाचल प्रदेश में आलू की फसल में पिछेता झुलसा बीमारी के प्रबंधन हेतु सलाह

मौसम की अनुकूलता के आधार पर हिमाचल प्रदेश में आलू की फसल में पिछेता झुलसा बीमारी निकट भविष्य में आने की संभावना है। अतः किसान भाइयों से अनुरोध है कि निम्नवत बिन्दुओं पर अमल करके अपनी फसल को इस बीमारी से बचाएं।

1. जिन किसान भाइयों ने आलू की फसल में अभी तक फफूंदनाशक दवा का छिड़काव नहीं किया है और जिनकी आलू की फसल में अभी पिछेता झुलसा बीमारी प्रकट नहीं हुई है, उन सभी किसान भाइयों को यह सलाह दी जाती है कि वो मेंकोजेब/कलोरोथेलोनील दवा का 0.2–0.25 प्रतिशत की दर से (2.0–2.50 किलोग्राम दवा प्रति 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर) छिड़काव तुरंत करें।

2. जिन खेतों में बीमारी प्रकट हो चुकी है उनमे साइमोक्सेनिल्+मेंकोजेब या फिनेमिडोन+मेंकोजेब या डाइमेथोमार्फ्+मेंकोजेब दवा का 3.0 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर (1000 लीटर पानी) की दर से छिड़काव करें।

3 फफूंदनाशक का छिड़काव दस दिन के अंतराल पर दोहराया जा सकता है। लेकिन बीमारी की तीव्रता के आधार पर इस अंतराल को घटाया या बढ़ाया जा सकता है। किसान भाइयों को इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि एक ही फफूंदनाशक का बार–बार छिड़काव न करें।

4 खेतों में जल निकास का उचित प्रबंध रखें एवं खेतों को खरपतवार रहित रखें।